लट्ठमार होली
भाग 2

अवधि : 02.45

शब्द : 452

	वक्ता	
00.01	डा. उमेश चंद्र शर्मा, भाषाविद	लट्ठा मार होली भगवान श्री कृष्ण और राधा ने द्वापर युग में खेली थी। उस समय भगवान श्री कृष्ण और राधा के हाथ में लकुट होता था, कनक का, सोने का वो होता था। कनक की पिचकारी होती थी। सोने की पिचकारी होती थी और वो परस्पर, एक दूसरे को प्रहार करते थे। प्रहार में जब आदमी को चोट लगती है तो इस चोट में खिन्नता नहीं आती है आनन्दित होता है।
00.43	माधव गोस्वामी	हमारे सभी गोस्वामी बालक, सभी हमारे बुजुर्ग यहां आज सज रहे हैं दूल्हे की तरह। ये सज धज के यहां हमारे ठाकुर जी की जो झंडी है, जिसको कृष्ण का प्रतिबिम्ब माना जाता है। हमारा कृष्ण कन्हईया झंडी में निवास करके हमारे साथ में चलता है और

		उसको ले के हम यहां आये हैं और अब हम यहां से सजधज के भांग घोटी छान कर, अपनी तैयारी करके श्री राधा रानी के मंदिर यहां से पद गायन समाज करते हुये जायेंगे।
01.09	चेतन शर्मा	पुराने बुजुर्ग से, सौ साल से चली जा रही है, कृष्ण भगवान के टाईम से चली जा रही है ये प्रथा, तब से हम मनाते जा रहे हैं यहां पे।
01.21	डा. उमेश चंद्र शर्मा, भाषाविद	एक निश्चित गली है, रंगीली गली के नाम से प्रसिद्ध है, उस रंगीली गली में, वहां प्रारंभ से ही रंगीली गली में ये होली चली आ रही है।
01.31	चेतन शर्मा	रंगीली गलियों में जो राधा रानी की सखियां हैं उनके साथ हास परिहास करते हुये, उनके होली के ठिठोले करते हुये रंगीली गलियों की शोभाओं में, रसियाओं के नाचते गाते हुये बृज वासी, गोपियां, सभी अपना आनन्द लेते हुये होली को फिर आगे लट्ठा मार होली प्रारम्भ होगी।
01.48	डा. उमेश चंद्र शर्मा, भाषाविद	महिलाओं में बताते हैं कि एक महीने पहले से महिलायें घर का काम काज बंद कर देती हैं। केवल घी और पौष्टिक आहार ग्रहण करती हैं, इसके अलावा

		और कुछ नहीं लेती हैं और स्वतंत्र रूप से रहती हैं और लट्ठ चलाने का अभ्यास करती हैं। वो लट्ठ जब पडता है तो चोट पहुंचती है, चोट पहुंचती है तो एक स्मृति बन जाती है। संसार के अंदर जा व्यक्ति जिसको आहत करता है, जिसको चोट पहुंचाता है, उस व्यक्ति को कोई भूल नहीं सकता, उसका विस्मरण नहीं है। तो इसी तरीके से परस्पर प्रेम की इस घात में और प्रतिघात में वो एक स्मरण बना रहे भक्तों को सदैव के लिये, इसलिये ये लट्ठमार होली की परम्परा उसी परम्परा से जुडती हुई लौकिक जीवन में आई। और वो डंडा जब पडता है, लट्ठ जब पडता है किसी के ऊपर, वो उसको ये प्रसाद समझ के लोग उसको ग्रहण करते हैं और उसका आनन्द लेते हैं।